पर्यावरणीय रक्षण एवं संरक्षण :

ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड का पर्यावरण विभाग संधारणीय विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कंपनी के पर्यावरण एवं वन संबंधित मामलों का निपटारण करता है और अपने निगमित पर्यावरणीय नीति के क्रियान्वयन की दिशा में प्रतिबंध है। पर्यावरण पर कोयला खनन गतिविधियों के प्रभाव का नियमित अनुश्रवण किया जाता है और सांविधिक मानदंडों, अधिनियमों एवं नियमों में विनिर्दिष्ट प्रावधानों के अनुसार पर्याप्त पर्यावरण रक्षण अध्युपाय किए जाते हैं। पर्यावरणीय मंजूरी एवं वानिकी मंजूरी के शर्तों के श्रेष्ठतर अनुषक्ति के लिए कदम उठाने के अलावा, कंपनी ने सतत विकास की दिशा में हरित पहल की है।

निगमित पर्यावरणीय नीति का अंगीकरण

ईसीएल ने अपना निगमित पर्यावरण नीति का निरूपण और क्रियान्वयन किया है जो कोल इंडिया लिमिटेड की पर्यावरण नीति के समरूप है। ईसीएल की पर्यावरण नीति अभिकथित करती है कि "ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड (ईसीएल)" विस्तृत कंपनी में क्रियान्वयन के माध्यम से एक मिशन मोड में एकीकृत परियोजना की योजना एवं अभिविन्यास, 10 आर (संक्षेपण, पुनर्चक्रण, पुनःउपयोग, पुनर्रचना, पुनःप्रयोजन, नवीकरण, जीर्णोद्धार, पुनःप्राप्ति, विपरिनियोजन एवं अस्वीकार) परिकल्पना को परिनियोजित करने, प्रदूषण निवारण/ अल्पीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जैव-विविधता एवं पारिस्थिकी का पुनरूद्धार, अपशिष्टों का उचित निपटान, जलवायु परिवर्तन परिचयन और समावेशी संवृद्धि के जरिए पर्यावरण के रक्षण द्वारा संधारणीय विकास को प्रवर्तन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

संधारणीय विकास प्रकोष्ठ (एसडीसी)

ईसीएल में "संधारणीय विकास प्रकोष्ठ" का गठन कंपनी द्वारा समग्र रूप से कृत भिन्न-भिन्न पर्यावरणीय शमन अध्युपायों की योजना बनाने, दिशानिर्देश तैयार करने, समय-समय पर निगरानी और मूल्यांकन करने के लिए नए विचारों को उत्पन्न करने की दिशा में काम करने के लिए किया गया है। एसडीसी प्रकोष्ठ की अध्यक्षता निदेशक (तकनीकी) योजना व परियोजना द्वारा की जाती है और इसमे प्रमुख विभागीय प्रधान होते हैं। पर्यावरणीय शमन अध्युपायों को उचित और संधारणीय रीति से करने से आस-पास के क्षेत्रों में काम करने वाले और वास करने वाले लोगों को श्रेष्ठतर वातावरण मिलेगा और राष्ट्र में कोयला क्षेत्र की समग्र छवि में भी सुधार होगा। एसडीसी के अधीन गतिविधियाँ यथा निम्नवत थे :

अ. इको-पार्क/पर्यटन स्थलों का विकास :

i . ईसीएल ₹9.32 करोड़ की प्रत्याशित लागत के साथ पश्चिम बंगाल वन विकास निगम लिमिटेड द्वारा 13.02 हेक्टेयर भूमि के ऊपर झाँझरा क्षेत्र में इको-पार्क के विकास करने के लिए प्रक्रियारत है।

ii. ईसीएल ₹1.22 करोड़ की लागत से पेवर ब्लॉक पथ के साथ-साथ परिसीमा दीवार के निर्माण के जरिए गुँजन इकोलॉजिकल पार्क के सौंदर्यीकरण करने के लिए प्रक्रियारत है। उसके लिए कार्यादेश पूर्व में ही निर्गत किया जा चुका है।

iii. भविष्य में तीन (03) इको-पार्क को विकसित किए जाने की योजना बनाई गई है।

आ. धूल दमन अध्युपाय :

ईसीएल की खानें एवं रेलवे पार्श्वस्थलें जल-छिलकाव व्यवस्थाओं से सुसज्जित है। वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान, सतग्राम क्षेत्र में छः (06) फॉग कैनन अधिष्ठापित किए गए है और कुनुस्तोड़िया के बांसरा रेलवे पार्श्वस्थल में अचल जल छिड़काव यंत्र अधिष्ठापित किए गए हैं।

इ. उपरिभार का वैकल्पिक उपयोग :

ईसीएल ने उपरिभार के वैकल्पिक उपयोग के लिए एक पायलट परियोजना को ग्रहण किया है और ईसीएल के काजोड़ा क्षेत्र में प्रसंस्कृत ओबी संयंत्र की अधिष्ठापना की प्रकिया में है। संयंत्र उपरिभार को रेत में रूपांतरित करेगा जो ईसीएल के भूमिगत खानों में भूगर्त-भरण के प्रयोजन से उपयोगिता सिद्धि की जाएगी। इससे नदी तल से रेत निष्कर्षण कम होगी जिससे नदी पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार होगा और कंपनी की कुल रेत भूगर्त-भरण लागत में कमी आएगी।

ई. वैज्ञानिक अध्ययन :

i. सीएसआईआर-सीआईएमएफआर, धनबाद द्वारा "क्षेत्र आधारित अध्ययन का उपयोग करके विद्यमान जैव विविधता और पारिस्थितिक लाभ के साथ सोनपुर बजारी खुली खदान परियोजना में लगभग 245.20 हेक्टेयर के पुनःउद्धारित उपरिभार स्थल की पारिस्थितिक प्रास्थिति का निर्धारण" किया गया है। प्रारूप अंतिम प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया है।

ii. ईसीएल के छः खदानों (राजमहल खुली खदान परियोजना, सोनपुर बजारी खुली खदान परियोजना, कापासारा खुली खदान परियोजना, मधाईपुर खुली खदान परियोजना, शंकरपुर खुली खदान परियोजना एवं चितरा पूर्वी खुली खदान परियोजना) को आईआईटी, खड़गपुर द्वारा "ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड के उपरिभार से प्रसंस्कृत उपरिभार/रेत निष्कर्षण के लिए साध्यता अध्ययन" करने के लिए चिह्नित किया गया है।

ईसीएल में पारिस्थितिक और स्थिरता गतिविधियां